ISSN: 2249-7196
IJMRR/Nov. 2024/ Volume 14/Issue 9/1-8
जागेश्वरी साहू / International Journal of Management Research & Review

जिला गरियाबंद में कोविड और पश्चात् चरणों के दौरान स्कूली छात्रों के शैक्षिक वातावरण में मूल्य शिक्षा का परिप्रेक्ष्य

जागेश्वरी साहू[1], डॉ सिद्धेश्वर मिश्रा[2]

रिसर्च स्कॉलर,कला एवं मानविकी विभाग ,आईएसबीएम विश्वविद्यालय ,नवापारा ,कोसमी,छत्तीसगढ़ [1]
प्रोफेसर ,कला एवं मानविकी विभाग ,आईएसबीएम विश्वविद्यालय ,नवापारा ,कोसमी,छत्तीसगढ़[2]

सार

कोविड-19 महामारी ने गरियाबंद जिले में शिक्षा के क्षेत्र में गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कीं, जिसमें स्कूलों की बंदी और ऑनलाइन शिक्षा की अनिवार्यता शामिल थी। इस संक्रमण के दौरान कई छात्रों ने तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में असमर्थता दिखाई, जिससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट आई और सामाजिक इंटरैक्शन का अवसर समाप्त हो गया। इस परिप्रेक्ष्य में, मूल्य शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ गया, क्योंकि यह छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की स्थापना में मदद करती है और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए आवश्यक है। महामारी के पश्चात, शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। विद्यालयों को ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा का संयोजन करना चाहिए, जबकि शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही, स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी से मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों को प्रभावी बनाया जा सकता है। इन उपायों के माध्यम से गरियाबंद जिले में छात्रों का शैक्षिक वातावरण सशक्त होगा और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता मिलेगी।

कीवर्ड: *मूल्य शिक्षा, कोविड-19, गरियाबंद, शैक्षणिक प्रदर्शन, स्थानीय समुदाय.*

1. प्रस्तावना

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं, और इसका गहरा प्रभाव विशेष रूप से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, जैसे कि जिला गरियाबंद, में देखा गया है। महामारी ने विद्यालयों की शैक्षिक प्रक्रियाओं को बाधित किया और छात्रों के शैक्षिक वातावरण को प्रभावित किया। गरियाबंद में, जहां अधिकांश छात्र सीमित संसाधनों और संरचनाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं, मूल्य शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। मूल्य शिक्षा केवल नैतिक और सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि यह छात्रों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस संदर्भ में, यह अध्ययन कोविड-19 के दौरान और बाद में गरियाबंद जिले में स्कूली छात्रों के शैक्षिक वातावरण में मूल्य शिक्षा के विभिन्न पहलुओं और उसकी पुनर्स्थापना के उपायों का विश्लेषण करेगा।

कोविड-19 का शिक्षा पर प्रभाव

कोविड-19 महामारी ने विद्यालयों के संचालन में कई बाधाएँ उत्पन्न की हैं। जब भारत में लॉकडाउन लागू हुआ, तो सभी विद्यालयों को बंद कर दिया गया और शिक्षण प्रक्रिया ऑनलाइन मोड में स्थानांतरित हो गई। इस स्थिति ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को चुनौती दी, क्योंकि बहुत से छात्रों के पास तकनीकी संसाधनों की कमी थी। उदाहरण के लिए, इंटरनेट की अपर्याप्तता और स्मार्टफोन का अभाव कई छात्रों को ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने से रोकता था। इसके परिणामस्वरूप, छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित हुआ, जिससे उनके शैक्षिक विकास में रुकावट आई। इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी बढ़ गईं, जैसे अवसाद और तनाव, जो मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता को और भी महत्वपूर्ण बनाते हैं। इन समस्याओं ने यह स्पष्ट किया कि केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि छात्रों के नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास भी आवश्यक है।

मूल्य शिक्षा का महत्व

मूल्य शिक्षा का तात्पर्य छात्रों को नैतिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत मूल्यों से अवगत कराने से है, ताकि वे जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बन सकें। गरियाबंद जिले में, जहां सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ अधिक हैं, मूल्य शिक्षा छात्रों के मानसिक और नैतिक विकास के लिए आवश्यक है। यह उन्हें जीवन में सही निर्णय लेने, सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने और समुदाय के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, सामुदायिक सेवा और सहयोग, सहिष्णुता, और मानवता के मूल्य सिखाना छात्रों को बेहतर इंसान बनने में सहायता कर सकता है। कोविड-19 के बाद, जब छात्रों को अपनी भावनाओं और मानसिक स्वास्थ्य का सामना करना है, तब मूल्य शिक्षा उन्हें उस दिशा में मार्गदर्शन कर सकती है। यह उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे वे न केवल अपने लिए बल्कि समाज के लिए भी एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

कोविड के बाद के चरणों में सुधार के उपाय

महामारी के बाद, शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता स्पष्ट हो गई है, विशेषकर गरियाबंद जिले में। इस क्षेत्र के विद्यालयों को एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिसमें ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा का संयोजन, शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण, और स्थानीय समुदाय की भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण तत्व शामिल हों। कोविड-19 के बाद, स्कूलों को दोनों प्रकार की शिक्षा का उपयोग करना चाहिए—ऑनलाइन कक्षाएँ छात्रों को लचीलापन और सुविधाजनक तरीके से सीखने का अवसर देती हैं, जबकि ऑफलाइन कक्षाएँ सामाजिक इंटरैक्शन और व्यक्तिगत ध्यान का मौका प्रदान करती हैं। इससे छात्रों को अपने साथियों और शिक्षकों के साथ बेहतर संबंध बनाने में मदद मिलती है। इसके साथ ही, शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों और तकनीकों पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे नैतिक और सामाजिक मूल्यों को प्रभावी ढंग से अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर सकें। शिक्षक जब मूल्य शिक्षा के महत्व को समझते हैं, तो वे छात्रों को सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं। इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को भी मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। समुदाय का सहयोग छात्रों के लिए एक मजबूत समर्थन प्रणाली प्रदान करता है, जो मूल्य

शिक्षा के प्रभाव को बढ़ाता है। इन उपायों के माध्यम से, गरियाबंद जिले में छात्रों के शैक्षिक वातावरण में मूल्य शिक्षा को पुनर्स्थापित और संवर्धित किया जा सकता है, जिससे वे बेहतर नागरिक और समाज का हिस्सा बन सकें। यह अध्ययन इस बात की जांच करेगा कि किस प्रकार कोविड-19 के बाद गरियाबंद जिले के स्कूलों में मूल्य शिक्षा को समर्पित और लागू किया जा सकता है, ताकि छात्रों का समग्र विकास हो सके।

2. अनुसंधान का उद्देश्य

- महामारी के कारण विद्यालयों के संचालन में आने वाली बाधाएँ और उसके परिणामस्वरूप छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट।
- मूल्य शिक्षा के महत्व और उसके विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण।
- इस क्षेत्र में मौजूदा मूल्य शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना।
- शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए संभावित उपायों की पहचान करना।

3. शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट

कोविड-19 महामारी के दौरान छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन गया। अनुसंधान से पता चला है कि अधिकांश छात्र ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में असमर्थ रहे, जिसके कारण उनके ज्ञान में कमी आई। तकनीकी संसाधनों की कमी, जैसे इंटरनेट कनेक्शन, स्मार्टफोन और डिजिटल साक्षरता का अभाव, छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा की पहुँच को मुश्किल बना देता है। इससे उनके अकादमिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है और महत्वपूर्ण अवधारणाएँ कमजोर होती हैं। साथ ही, मूल्य आधारित शिक्षा पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जब शिक्षक छात्रों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क में नहीं आ पाते, तो वे नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्यों को प्रभावी ढंग से नहीं सिखा पाते। इस प्रकार, न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट आई है, बल्कि छात्रों के नैतिक विकास पर भी गंभीर प्रभाव पड़ा है, जो भविष्य में सुधार के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता को दर्शाता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

कोविड-19 महामारी ने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें अवसाद, चिंता, और तनाव की समस्याएँ बढ़ गई हैं। विद्यालयों के बंद होने, सामाजिक अलगाव, और ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियों ने छात्रों को मानसिक दबाव का सामना करने के लिए मजबूर कर दिया। कई छात्रों ने अपनी दिनचर्या खो दी, जिससे उनकी मानसिक स्थिति में और भी गिरावट आई। महामारी के कारण अनिश्चितता और सुरक्षा की कमी ने छात्रों के लिए तनाव का एक नया स्तर पैदा किया, जिससे उनकी मानसिक कल्याण में नकारात्मक परिवर्तन आए। इन मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं ने छात्रों की मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता को और अधिक बढ़ा दिया है। मूल्य शिक्षा न केवल छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों से अवगत कराती है, बल्कि यह उनके मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी मदद कर सकती है। जब छात्र अपने भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होते हैं और उन्हें सहानुभूति, सहयोग, और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों की शिक्षा मिलती है, तो वे अपनी समस्याओं का सामना करने के लिए अधिक सक्षम बनते हैं। इस प्रकार, मानसिक

स्वास्थ्य के इस संकट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मूल्य शिक्षा का समावेश छात्रों के समग्र विकास के लिए कितना आवश्यक है, ताकि वे एक स्थायी और स्वस्थ जीवन जी सकें।

4. मूल्य शिक्षा के सिद्धांत

मूल्य शिक्षा का अर्थ

मूल्य शिक्षा का तात्पर्य छात्रों को नैतिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत मूल्यों से अवगत कराने से है, ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें। यह शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसका उद्देश्य छात्रों को ऐसे मूल्यों की शिक्षा देना है जो उन्हें अपने जीवन में सही और गलत के बीच भेद करने में मदद करें। मूल्य शिक्षा में नैतिकता, सहानुभूति, सहयोग, और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुणों का समावेश होता है। ये गुण छात्रों को एक ऐसा मजबूत नैतिक आधार प्रदान करते हैं, जिससे वे अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सही निर्णय ले सकें। मूल्य शिक्षा न केवल अकादमिक ज्ञान को बढ़ावा देती है, बल्कि यह छात्रों को एक संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण विकसित करने में भी मदद करती है। जब छात्र अपने नैतिक मूल्यों को समझते हैं और उन पर आधारित निर्णय लेते हैं, तो वे अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने में सक्षम होते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें न केवल एक अच्छे छात्र बनाती है, बल्कि एक प्रभावी नागरिक भी बनाती है जो समाज के विकास में योगदान कर सकता है।

मूल्य शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत

सकारात्मक दृष्टिकोण: मूल्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि छात्रों में सकारात्मक मूल्यों का विकास करना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य छात्रों को उनके कार्यों के प्रति जिम्मेदार बनाना है। जब छात्र सकारात्मक मूल्यों, जैसे कि ईमानदारी, सहानुभूति, और परिश्रम, को अपनाते हैं, तो वे न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में बल्कि अपने समुदाय में भी सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें अपने कार्यों के परिणामों को समझने और उनकी जिम्मेदारी को स्वीकारने के लिए प्रेरित करता है।

समाजिक समरसता: मूल्य शिक्षा का दूसरा प्रमुख सिद्धांत समाजिक समरसता को बढ़ावा देना है। यह सिद्धांत शिक्षा के माध्यम से विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच समानता और सम्मान की भावना को विकसित करने पर केंद्रित है। जब छात्र विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए लोगों के प्रति सम्मान और समर्पण का भाव विकसित करते हैं, तो वे एक समर्पित और सहिष्णु समाज की नींव रखते हैं। इस तरह, शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सामाजिक एकता और सामंजस्य को भी बढ़ावा देती है, जो एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण है।

5. गरियाबंद जिले में मौजूदा स्थिति

विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का स्तर

गरियाबंद जिले के अधिकांश विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का स्तर सीमित है। यद्यपि कुछ विद्यालयों में इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, लेकिन व्यावहारिक अनुप्रयोग की कमी के कारण इसका प्रभाव बहुत

सीमित रहा है। कई विद्यालयों में मूल्य शिक्षा को केवल एक औपचारिकता के रूप में देखा जाता है, जहाँ इसे नियमित पाठ्यक्रम के बजाय एक अतिरिक्त गतिविधि के रूप में शामिल किया जाता है। इससे छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों को सीखने और आत्मसात करने का अवसर नहीं मिल पाता। मूल्य शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यदि शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों और तकनीकों में प्रशिक्षित नहीं किया गया है, तो वे छात्रों को इन मूल्यों को प्रभावी ढंग से सिखाने में असमर्थ होंगे। इस प्रकार, गरियाबंद जिले में विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें प्रशिक्षण, संसाधनों का सही उपयोग, और व्यावहारिक अनुप्रयोग को बढ़ावा देना शामिल है।

स्थानीय समुदाय की भूमिका

स्थानीय समुदायों का मूल्य शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान होता है, जो छात्रों के नैतिक और सामाजिक विकास को सशक्त बनाता है। परिवार और समाज के अन्य सदस्यों का सहयोग इस प्रक्रिया में आवश्यक है, क्योंकि वे बच्चों के लिए पहले शिक्षण स्थान होते हैं। जब परिवारों में सकारात्मक मूल्यों का प्रचार किया जाता है, तो यह बच्चों की शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाता है। सामुदायिक भागीदारी से मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों को प्रभावी बनाया जा सकता है। जब स्थानीय समुदाय के सदस्य, जैसे कि माता-पिता, शिक्षक, और अन्य नेता, मिलकर काम करते हैं, तो वे एक सशक्त समर्थन प्रणाली तैयार कर सकते हैं, जो छात्रों को नैतिकता, सहानुभूति और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार, समुदाय का सहयोग मूल्य शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार तैयार करता है, जिससे बच्चों का समग्र विकास संभव होता है।

6. कोविड के बाद के चरणों में मूल्य शिक्षा का संवर्धन

ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा का संयोजन

कोविड-19 के बाद, विद्यालयों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों का संयोजन करना आवश्यक है। यह विधि छात्रों को अधिक लचीलापन और विविधता प्रदान करती है, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार होता है। ऑनलाइन शिक्षा, जिसमें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, और डिजिटल संसाधनों का उपयोग शामिल है, छात्रों को अपने समय और स्थान के अनुसार सीखने की स्वतंत्रता देती है। इससे वे अपने व्यक्तिगत और शैक्षणिक जीवन को बेहतर तरीके से संतुलित कर सकते हैं। वहीं, ऑफलाइन शिक्षा, जिसमें व्यक्तिगत कक्षाएं और शारीरिक इंटरएक्शन शामिल हैं, छात्रों को सामाजिक कौशल विकसित करने और शिक्षकों से सीधे संवाद करने का अवसर प्रदान करती है। जब ये दोनों तरीके एक साथ मिलते हैं, तो छात्र एक समग्र और संतुलित शैक्षणिक अनुभव प्राप्त करते हैं। इस संयोजन के माध्यम से, विद्यालय मूल्य शिक्षा को अधिक प्रभावी तरीके से लागू कर सकते हैं, क्योंकि छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देने का अवसर मिलता है। इस प्रकार, ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा का सही मिश्रण छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

शिक्षकों का प्रशिक्षण मूल्य शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है। शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों और तकनीकों पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की प्रभावी शिक्षा दे सकें। इस प्रशिक्षण में उन्हें यह सिखाया जाना चाहिए कि कैसे वे अपने पाठ्यक्रम में इन मूल्यों को शामिल कर सकते हैं, जैसे कि सहानुभूति, ईमानदारी, और जिम्मेदारी। प्रशिक्षण के दौरान, शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण विधियों और गतिविधियों के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए, जिनसे मूल्य शिक्षा को मजेदार और आकर्षक बनाया जा सके। इसके अलावा, शिक्षकों को यह भी सिखाना चाहिए कि वे कैसे छात्रों के साथ संवाद कर सकते हैं, ताकि वे अपने विचारों और भावनाओं को साझा कर सकें। इस प्रकार, उचित प्रशिक्षण से शिक्षकों को छात्रों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिलेगा, जिससे वे जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बन सकें।

सामुदायिक भागीदारी

सामुदायिक भागीदारी मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्थानीय समुदायों को इन कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके और मूल्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ाया जा सके। जब समुदाय के सदस्य, जैसे माता-पिता, सामाजिक कार्यकर्ता, और अन्य हितधारक, एक साथ मिलकर काम करते हैं, तो वे छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। सामुदायिक भागीदारी से विद्यालयों और परिवारों के बीच एक मजबूत संबंध बनता है, जिससे छात्रों को समर्थन और प्रोत्साहन मिलता है। यह भागीदारी मूल्य शिक्षा को वास्तविकता में लागू करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है, जहाँ समुदाय के सदस्य शिक्षा कार्यक्रमों में योगदान करते हैं, जैसे कार्यशालाएँ, सेमिनार, और सामुदायिक आयोजनों के माध्यम से। इसके परिणामस्वरूप, छात्र न केवल पाठ्यक्रम से जुड़े नैतिक मूल्यों को समझते हैं, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन में लागू करने का अवसर भी प्राप्त करते हैं, जिससे उनका समग्र विकास संभव हो पाता है।

7. निष्कर्ष

कोविड-19 महामारी ने शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश की, विशेषकर गरियाबंद जिले में। महामारी के कारण स्कूलों की बंदी और ऑनलाइन शिक्षा की अनिवार्यता ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट और मानसिक स्वास्थ्य में समस्या उत्पन्न की। तकनीकी संसाधनों की कमी ने कई छात्रों को ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने से वंचित रखा, जिससे उनके ज्ञान में कमी आई और सामाजिक इंटरैक्शन का अवसर भी समाप्त हो गया। ऐसे में, मूल्य शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया, क्योंकि यह न केवल नैतिक और सामाजिक मूल्यों की स्थापना में मदद करती है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए भी आवश्यक है। महामारी के बाद, शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। विद्यालयों को ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा का संयोजन करना चाहिए, ताकि छात्रों को लचीलापन और विभिन्नता मिल सके। इसके साथ ही, शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों पर विशेष प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है ताकि वे छात्रों को सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकें। इसके अलावा, स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी से मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों को और

अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इन सभी उपायों के माध्यम से, गरियाबंद जिले में छात्रों के शैक्षिक वातावरण में मूल्य शिक्षा को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। यह न केवल छात्रों के व्यक्तिगत विकास में सहायक होगा, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करेगा, जिससे वे एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें।

सुझाव

1. गरियाबंद जिले के विद्यालयों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों का समुचित संयोजन करना चाहिए। इससे छात्रों को लचीलापन और विविधता मिल सकेगी, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार होगा।
2. शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों और तकनीकों पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उन्हें यह सिखाना आवश्यक है कि वे कैसे नैतिक और सामाजिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में प्रभावी ढंग से शामिल कर सकते हैं।
3. स्थानीय समुदायों को मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। यह छात्रों को नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्यों को आत्मसात करने में मदद करेगा।
4. विद्यालयों को सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्रों को आवश्यक तकनीकी संसाधन उपलब्ध हों, जैसे कि स्मार्टफोन और इंटरनेट कनेक्शन, ताकि वे ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले सकें।
5. स्कूलों को नियमित रूप से मूल्य शिक्षा से संबंधित कार्यशालाएँ, सेमिनार और सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए, जिससे छात्रों को वास्तविक जीवन में नैतिक मूल्यों को समझने और लागू करने का अवसर मिले।

8. संदर्भ

1. अल- अंसी , ए.एम., सुप्रायोगो , आई., और अबिदीन , एम. (2019)। विकासशील देशों में सीखने की प्रक्रिया की विभिन्न सेटिंग्स पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का प्रभाव। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पी-आईएसएसएन: 2163-2669, ई-आईएसएसएन: 2163-2677, 9(2):
2. अल- अरैबी , एए, नाज़री बिन महरीन , एम., और युसॉफ , आरसी (2019)। उच्च शिक्षा संस्थानों में ई-लर्निंग तत्परता के तकनीकी पहलू कारक : डेल्फी तकनीक। शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी, 24(1), 567–590।
3. एल्गर्स , ए. (2019)। ओपन टेक्स्टबुक: सशक्तिकरण और व्यवधान के बीच संतुलन। प्रौद्योगिकी , ज्ञान और सीखना (1):1-16.
4. ब्रेनर, जे., और स्मिथ, ए. (2013)। ऑनलाइन वयस्कों में से 72% सोशल नेटवर्किंग साइट उपयोगकर्ता हैं। वाशिंगटन, डीसी: प्यू इंटरनेट और अमेरिकन लाइफ प्रोजेक्ट।

5. चाविंगा , डब्ल्यू.डी., और ज़िन , एस. (2016)। मलावी के म्ज़ुज़ू विश्वविद्यालय में सूचना विज्ञान और संचार संकाय में छात्रों द्वारा वेब 2.0 का उपयोग। साउथ अफ़्रीकन जर्नल ऑफ़ इन्फ़ॉर्मेशन मैनेजमेंट, 18(1)।
6. चियांग, टी.-एच., यांग, एस.-जे., और ह्वांग, जी.-जे. (2014)। प्राकृतिक विज्ञान जांच गतिविधियों में छात्रों की सीखने की उपलब्धियों और प्रेरणाओं को बेहतर बनाने के लिए एक संवर्धित वास्तविकता-आधारित मोबाइल लर्निंग सिस्टम। शिक्षा प्रौद्योगिकी सोसायटी 17, 352–365।
7. चोई, ई., लिंडक्विस्ट, आर., और सॉन्ग, वाई. (2014)। कोरियाई नर्सिंग छात्रों की आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और स्व-निर्देशित सीखने पर समस्या-आधारित सीखने बनाम पारंपरिक व्याख्यान का प्रभाव। नर्स शिक्षा आज, 34(1), पृष्ठ.52-56.
8. कोनोले , जी., और एलेविज़ो , पी. (2010)। उच्च शिक्षा में वेब 2.0 टूल के उपयोग की एक साहित्यिक समीक्षा। उच्च शिक्षा अकादमी द्वारा कमीशन की गई एक रिपोर्ट में। मिल्टन कीन्स: द ओपन यूनिवर्सिटी। कोर्सेरा । (2020)।
9. डोमोविक ć , वी., व्लास्टा , वी.वी., और बौइलेट , डी. (2016)। " समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका के बारे में छात्र शिक्षकों की मान्यताएँ ।" यूरोपियन जर्नल ऑफ़ स्पेशल नीड्स एजुकेशन 32 (2): 1–16.
10. डोवी , के. एंड. (2014)। अनुकूलन के लिए डिजाइनिंग : सामाजिक-स्थानिक संयोजन के रूप में स्कूल। जर्नल ऑफ आर्किटेक्चर, 19(1), 43–63.

IJMRR